श्रीकृष्ण अवतरण

राजेश जैन 'चेतन'

जेल में जन्म लिया
ताले सब खुल गये
द्वारपाल निद्रा प्रलाप करने लगे।
बारिश तूफान वेग बढता ही जा रहा था
पानी में उतर वासुदेव डरने लगे।
पांव छू के जमना ने रास्ता बनाया और
शेषनाग छाता बन साथ चलने लगे।
नन्द के महल लाल छोड वासुदेव गये
यशोदा की गोद में हरि मचलने लगे॥
नन्द जी का बेटा सबका दुलारा हो गया।
घर छोड़ पति छोड़ और सन्तान छोड़
गोपियों का रोम रोम श्याम प्यारा हो गया।
लोकलाज छोड़ कर श्याम संग रास किया
गोकुल का लाल सबका सहारा हो गया।
कृष्ण के विरह में गोपियों के आसुंओ से
वृन्दावन सारा जल खारा-खारा हो गया॥

ब्रजमण्डल हर इक गली गली गली गली
राधा-राधा राधा-राधा राधा-राधा गाती है।
राधा नाम उठती है राधा नाम जपती है
राधा जी भी कृष्ण संग गाती इठलाती हैं।
राधे में है कृष्ण और कृष्ण में है राधा
राधा मतलब बस इतना समझ लेना
धारा विपरित बहे राधा बन जाती है॥
धर्मभुमि युद्धभुमि पार्थ हुए मोहयुक्त।
कृष्ण-कंठ गूँज उठा गीता का तराना है।
दिव्य दृष्टि पार्थ मोह तोड़ नहीं सकी जब
हरि-दिव्यरूप देख अर्जुन माना है।
जीत पांडवो की हुई और युद्ध शांत हुआ
हरि बोले अब मुझे निज धाम जाना है।
वादा किया एक दिन आऊँगा ज़रूर यहाँ
''हरियाणा'', जहाँ एक दिन ''हरिआना'' हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय कवि,
भिवानी, हरियाणा